भट्टारक सुमतिकीर्ति

जीवन परिचय : भट्टारक शुभचन्द्र के शिष्य भट्टारक सुमतिकीर्ति हुए हैं। इन्होंने 'कर्मकांड' और 'प्राकृतपंचसंग्रह' जैसे सिद्धान्त ग्रन्थों की टीका लिखी है। इन टीकाओं से उनके सिद्धान्त विषयक पांडित्य का ज्ञान होता है। ये आचार, दर्शन, कर्मसिद्धान्त, अध्यात्म एवं काव्य के भी निष्णात विद्वान थे।

इनका समय 16वीं 17वीं शताब्दी का मध्यभाग है।

रचना-परिचय : भट्टारक सुमतिकीर्ति ने संस्कृत एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में रचनाएँ लिखी हैं।

संस्कृत रचनाएँ :

1. कर्मकाण्डटीका : यह आचार्य नेमिचन्द्र कृत गोम्मटसार कर्मकाण्ड की संस्कृत टीका है जिसकी रचना भट्टारक ज्ञानभूषण की सहायता से की है।

2. प्राकृतपंचसंग्रहटीका : यह प्राकृत-पंचसंग्रह की संस्कृत टीका है।

हिन्दी-रचनाएँ :

1. धर्मपरीक्षारास : इसका उल्लेख पंडित परमानन्द शास्त्री ने अपने प्रशस्ति-संग्रह की भूमिका में किया है। इसका रचनाकाल विक्रम संवत् 1625 है।

2. वसन्तविलास : तीर्थंकर नेमिनाथ के विवाह सन्दर्भ को लेकर रासरूप में इसकी रचना की गयी है। भाषा गुजराती प्रभावित राजस्थानी है।

3. जिह्वादन्तसंवाद : इस लघुकाय रचना में 11 पद्य हैं। इसमें जिह्वा और दाँतों के विवाद द्वारा एकता और समन्वय का सन्देश दिया गया है। भाषा सरल और गुजराती प्रभावित राजस्थानी है।

4. जिनवरस्वामीविनती : इस स्तवन में 23 पद्य हैं। इनमें जिनेन्द्र भगवान की स्तुति वर्णित है। इनमें कवि ने बताया है कि इन्द्रियाँ उसी की सफल हैं, जो प्रभु स्तुति, पूजन, वन्दन और नामस्मरण आदि करता है।

5. शीतलनाथ गीत : इस गीत में शीतलनाथ तीर्थंकर की स्तुति की गयी है। भट्टारक सुमतिकीर्ति द्वारा कुछ अन्य फुटकर पदों में संसार, शरीर और भोगों

के चित्र अंकित किये हैं। इनकी एक अन्य गणित विषयक रचना की सूचना पंडित परमानन्दजी ने दी है जो उत्तर-छत्तीसी नाम की है।

भट्टारक सुमतिकीर्ति ने ग्राम और नगरों में विहार कर धर्मविमुख जनता को धर्म की ओर अग्रसर किया है, मिथ्यावाद में फँसे हुए व्यक्तियों का उद्धार किया है और लोगों को साहित्यसेवा की दृष्टि से जागृत करने का भी अद्‌भुत कार्य किया है।